469वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 40 | द्वितीय अंक | सितम्बर 2017

इस अंक में...

11 जीतने से अधिक महत्वपूर्ण है जीतने की इच्छा होना..
15 राष्ट्रीय घटनाक्रम
25 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
33 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
42 नवीनतम सामान्य ज्ञान
47 सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा में सफलता : इस बड़े अवसर को अपनी सबसे बड़ी चुनौती बनाएं
49 रोजगार समाचार
51 खेलकूद
56 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
59 युवा प्रतिभाएं
70 स्मरणीय तथ्य
73 विश्व परिदृश्य
79 भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
81 फोकस—ई-शिक्षा हेतु 4-डिजिटल पहलें
83 समसामयिक वित्तीय एवं बैंकिंग समीक्षा—बैंकों की बढ़ती 'गैर-निष्पादित आस्तियाँ तथा बैड-बैंक की स्थापना
86 सामाजिक लेख—सामाजिक विकास में जनहित विज्ञापनों की भूमिका
87 पर्यावरण लेख—जल प्रदूषण एवं उसके स्रोत
89 शताब्दी वर्ष में विशेष लेख—चम्पारण में गांधी : एक अवलोकन
91 भौगोलिक लेख—प्राकृतिक आपदाएं
93 ऐतिहासिक लेख—दलित आन्दोलन : विवेचनात्मक अध्ययन
96 संवैधानिक लेख—प्रधानमंत्री का नेतृत्व व मंत्रिपरिषद्
98 सामयिक लेख—साइबर सुरक्षा और भारत
100 प्रौद्योगिकी लेख—सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक: एक परिचय
104 सामाजिक लेख—बाबा साहेब के सामाजिक न्याय की झलक
107 कृषि सम्बन्धित लेख—फसल-विविधीकरण एवं पादप संरक्षण : कृषि क्षेत्र में टिकाऊ विकास के लिए एक सशक्त प्रक्रिया
110 आगामी उत्तर प्रदेश सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2017 पर विशेष सामान्य अध्ययन
116 सार संग्रह
121 सामान्य अध्ययन (i) सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा, 2017
132 (ii) राष्ट्रीय रक्षा अकादमी परीक्षा, 2017
140 आईडीबीआई एक्जीक्यूटिव परीक्षा, 2016-17
143 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
145 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
147 ऐच्छिक विषय—(i) भूगोल—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
151 (ii) प्रबन्ध—यू.जी.सी.—नेट/जे.आर.एफ.परीक्षा, 2016
155 (iii) राजनीति विज्ञान—यू.जी.सी.—नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
162 वार्षिक रिपोर्ट 2016-17 खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र में अनुसंधान, विकास एवं प्रमुख उपलब्धियाँ
164 तर्कशक्ति योग्यता—रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया ग्रेड B ऑफीसर्स परीक्षा, 2015
170 एस.एस.सी. स्नातक स्तरीय (चरण-I) परीक्षा, 2016
177 क्या आप जानते हैं ?
178 अपना ज्ञान बढ़ाइए
179 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—शिक्षा में गुणात्मक ह्रास भावी पीढ़ी के भविष्य पर प्रश्नचिह्न
181 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—जाति प्रथा का प्रजातंत्रीकरण
183 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-458 का परिणाम
184 English Language–Syndicate Bank P.O. Exam., 2017

वार्षिकी

188 नवीनतम सामान्य ज्ञान
200 खेलकूद
209 अनुक्रमणिका—अक्टूबर 2016 अंक से जुलाई 2017 अंक तक)

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

जीतने से अधिक महत्वपूर्ण है जीतने की इच्छा होना...

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

"If there is will, there is way."

आपके रास्ते आपसे ही निकलेंगे. जब आप एकमुश्त (Unipsychi) होकर कहोगे, तो जीत आपके ही पक्ष में होगी. मुख्य बात जीत नहीं है, वह तो बहुत आसान है, जीतने की इच्छा होना महत्वपूर्ण है. Will जरूरी है. अब आप सोच रहे होंगे कि भला जीतने की इच्छा किसमें नहीं होगी ? हार किसी को भी नहीं चाहिए, किन्तु जीत के मार्ग पर आने वाली चुनौतियाँ अक्सर आदमी के हौसले पस्त कर दिया करती हैं. इसीलिए तो लोग उत्साह का दामन छोड़ देते हैं. भाग्य भरोसे अपनी नैया छोड़ देते हैं. वे जीत चाहते, तो हैं ..... किन्तु उनके वाक्यों में अक्सर यह 'तो' शब्द जुड़ जाता है यानि उनकी इच्छा- शक्ति विचलित होने लगती है. उनके चित्त में स्वयं के प्रति, अपनी सफलता के प्रति संदेह उभरने लगते हैं. संदेह उभरने के कारणों के रहते हुए भी, जो लोग अपने पौरुष पर भरोसा करते हैं.

''तू पुरुष है तो न डर,
विपत्तियों की मार से।
जन्मती है जीत जगत् में,
कंठ और कुठार से।।''

अपने पुरुषार्थ पर भरोसा रखने वाला इंसान सतत् जीतता जाता है. जीत की इच्छा होने का मतलब आत्मविश्वास से लबरेज़ जीवन जीना है.

''पड़े मुसीबत इतनी मुझ पर,
सभी मुसीबत कम हो जाए।
थके न दिल की कभी जवानी,
चाहे सांस खतम हो जाए।
दुःख की ज्वाला में तप तपकर,
इतना खून गरम हो जाए।
पर्वत पर भी पाँव धरूँ तो,
वह भी ज़रा नरम हो जाए।।
वह भी ज़रा नरम हो जाए।।''

आपके उत्साह को कोई कम न कर सके, न दुःख, न विफलता, न विपत्ति, न चुनौतियाँ ..... तब ही आप सच्ची जीत हासिल कर सकोगे. सच्ची जीत हौसलों में होती है. जिसके हौसले पस्त उनकी हालत खस्ता. जो अपने पर, अपने इष्ट पर भरोसा रख कर जीता है वह सतत् जीतता जाता है, चाहे विषय क्षेत्र कोई भी क्यों न हो.

महान् सम्राट् सिकंदर में जीत की इच्छा और आत्मविश्वास इतना गज़ब का था, सदियों के लिए सिकंदर पौरुष का परिचय बन गया, प्रतीक बन गया, किन्तु पोरस, वह राजा था, जो सिकन्दर के समक्ष झुका नहीं, लड़ता रहा. अपने दमखम को उसने हारने नहीं दिया. जब युद्ध में परास्त होने के कारण उसे बंदी बनाकर सिकंदर के सामने लाया गया और उससे पूछा गया कि अब आपके साथ कैसा सलूक किया जाए, तब भी उसने यही कहा कि जो एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है. उसका स्वाभिमान कभी भी कम नहीं हुआ. जीत की इच्छा का यह अद्भुत उदाहरण है.

●●●